मशरूम की खेती

3	मशरूम के लिए कंपोस्ट खाद तैयार करना
4	मशरूम उत्पादन की विधि

मशरूम के लिए कंपोस्ट खाद तैयार करना

मशरूम की अच्छी पैदावार के लिए अच्छी कम्पोस्ट यानि खाद का होना बहुत ज़रूरी है। मशरूम उगाने के लिए तीन चीज़ों की ज़रूरत होती है– कंपोस्ट, स्पान (मशरुम के बीज) और केसिंग मिश्रण। कंपोस्ट यानी खाद के ऊपर ही मशरूम उगाई जाती है, इसलिए यह अच्छी गुणवत्ता वाला होना चाहिए। खाद बनाने के दो तरीके है एक लंबा और दूसरा छोटा।

मशरूम की खेती से किसानों को फ़ायदा तो है ही, इसमें कई सावधानियां बरतने की भी उतनी ही ज़रूरत है। कंपोस्ट तैयार करने से लेकर तापमान सेट करने तक, कुछ बातों का ध्यान रखना बेहद ज़रूरी होता है। कंपोस्ट पूरी तरह से अमोनिया रहित होना चाहिए क्योंकि अगर

कंपोस्ट में अमोनिया गैस रह गई या बीज पुराना मिल गया या बीज गरम हो गया, उसमें किसानों को भारी नुकसान से दो-चार होना पड़ सकता है।

तैयार करें अमोनिया-फ़्री कंपोस्ट

अमोनिया रहित कंपोस्ट तैयार होगा तो उपज की गुणवत्ता अच्छी होगी। फसल रोग रहित रहेगी। जहां अमोनिया फसल में रह गया, वहां रोग फसल में शुरुआत से ही लगना शुरू हो जाएगा। मशरूम की फसल में लगने वाला मुख्य रोग ग्रीन मोल्ड (हरा फफूंद) है, जिसका सुधार नहीं हो पाता। इन सब बातों का ध्यान रखा जाए तो मशरूम की खेती किसानों के लिए फ़ायदे का सौदा है।

मशरूम उत्पादन में छोटी विधि

कंपोस्ट बनाने के दोनों ही तरीकों में खाद के मिश्रण को बाहर फर्श पर सड़ाया जाता है, लघु विधि यानी जल्दी खाद बनाने के तरीके का इस्तेमाल आमतौर पर बड़े फार्मों पर किया जाता है। इसमें लगभग दस दिनों बाद खाद के मिश्रण को एक खास किस्म के कमरे में भर दिया जाता है, जिसे निर्जीवीकरण चैम्बर या टनल के नाम से जाना जाता है। निर्जीवीकरण चैम्बर का फर्श जालीदार बना होता है, उसमें ब्लोअर (पंखा) द्वारा नीचे से हवा प्रवाहित की जाती है जो पूरे खाद से गुजरती हुई ऊपर की ओर निकल जाती है। इसी तरह कंपोस्ट में ब्लोअर द्वारा हवा को लगातार 6-7 दिन तक घुमाया जाता है। इस कंपोस्ट की उत्पादन क्षमता लंबी अवधि द्वारा बनाए गए कंपोस्ट से लगभग दोगुनी होती है। हालांकि छोटे किसानों के पास चैम्बर की सुविधा नहीं होती है, इसलिए वो खाद बनाने के लिए लंबी विधि का इस्तेमाल करते हैं।

खाद बनाने की लंबी विधि

खाद बनाने के लिए ताज़ा भूसा जो बारिश में भीगा हुआ न हो, उसका इस्तेमाल किया जाना चाहिए। धान की पुआल या गेहूं के भूसे की जगहर सरसों के भूसे का भी इस्तेमाल किया जा सकता है, लेकिन सरसों के भूसे के साथ मुर्गी खाद का उपयोग ज़रूर करें। ज़्यादा मात्रा में खाद बनाने के लिए सभी सामग्रियों का अनुपात से बढ़ा दें। किसान खाद (कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट) उपलब्ध न हो, तो यूरिया की मात्रा अनुपात के अनुसार बढ़ाई जा सकती है। लेकिन ताजे या कच्चे कंपोस्ट में नाइट्रोजन की मात्रा लगभग 1.6-1.7 प्रतिशत होनी चाहिए। वैज्ञानिक तरीके से 28 दिन में मशरूम का खाद तैयार होता है।

सबसे पहले भूसे को पक्के फर्श पर या साफ स्थान पर 2 दिन तक पानी से गीला करक रखा जाता है। फिर निम्न विधि का पालन किया जाता है–

0-दिन– गीले भूसे को एक फीट मोटा बिछाया जाता है। इसमें रसायन उर्वरक जैसे 6 किलोग्राम किसान खाद, 2.4 किलोग्राम यूरिया, 3 किग्रा. ग्रासुपर फास्फेट, 3 किग्रा पोटाश और 15 किलोग्राम गेहूं की चोकर को अच्छी तरह मिला दें। इसके बाद 5 फीट ऊंचा, 5 फीट चौड़ा और सुविधानुसार लंबाई में ढेर बना दें। ढेर बनाने के 24 घंटे बाद ढेर के अंदर का तापमान बढ़ने लगेगा और वो 70-75 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है।

छठे दिन (पहली पलटाई) – ढेर का बाहरी भाग खुला रहने से सूख जाता है, जिससे खाद

अच्छी तरह सड़ती नहीं है। खाद को सही तापमान पर पहुंचाने के लिए पलटाई की जाती है। इस समय 3 किलोग्राम किसान खाद, 1.2 किलोग्राम यूरिया और 15 किलोग्राम चोकर मिलाने के बाद ढेर को दोबारा से 0 दिन जैसा बना दें।

दसवें दिन (दूसरी पलटाई) – खाद के ढेर के बाहर के एक फीट खाद को अलग निकाल लें। इस पर पानी का छिड़काव करके पलटाई करते समय ढेर के बीच में डाल दें। इस पलटाई के समय खाद में 5 किलोग्राम शीरा 10 लीटर पानी में मिलाकर ढेर बनाने से पहले ही सारे खाद में मिला दें।

तेरहवें दिन (तीसरी पलटाई) – जैसे दूसरी पलटाई की, उसी तरह तीसरी करनी चाहिए।

बाहर के सूखे भाग पर हल्का पानी छिड़कें। खाद में 30 किलो जिप्सम मिलाएं।

सोलहवें दिन (चौथी पलटाई)- ढेर को पलटाई देकर फिर से पहले जैसा बना दें। खाद में नमी बनाए रखें।

उन्नीस से 25 दिन- 19 वें, 22वें और 25वें दिन खाद के ढेर को पलटाई देकर फिर से ढेर बना देना चाहिए।

अट्ठाइसवें दिन- अमोनिया और नमी के लिए खाद का परीक्षण करें। खाद में अमोनिया गैस की बदबू नहीं है। पानी की मात्रा उचित है तो खाद बिजाई के लिए तैयार है। बिजाई से पहले खाद के ढेर को खोल दें, ताकि खाद ठंडी हो जाए। अगर खाद में अमोनिया गैस रह गई हो तो हर तीसरे दिन पलटाई देते रहना चाहिए। पानी ज्यादा है तो खाद को हवा लगाएं।